आपातकाल
में
सृजन फुलवारी

संध्या गुप्ता

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

संध्या गुप्ता

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-206-7
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र - संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय - 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण - 2020, संध्या गुप्ता
मूल्य - 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY SANDHYA GUPTA
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	निराशा का गर्त	6
2.	उम्मीद	7
3.	यादें	8
4.	रजनी और दिनकर	9
5.	जीवन और संघर्ष	10
6.	आगाज	11
7.	फुरसत	12
8.	दरार	13
9.	फुर्सत के पल	14
10.	विश्वास की चाहत	15
11.	यादों की गलियां	16
12.	सुबह का भूला	17
13.	बहता दर्द	18
14.	मैं नारी हूं	19
15.	आस नैहर की	20
16.	सश्रम कारावास	21

निराशा का गर्त

दिन ठहरा, रातें ठहरी
क्षितिज पर, अरुणिमा क्यों रूक गई
धड़कनो ने बंद किया, स्पन्दन
जिन्दगी क्यों झुक गई
प्रेम भाव था, दरिया सा
दर्द में क्यों बदल गया
कलम रूकी, स्याही सूखी
पन्ना पन्ना, क्यों बिखर गया
वो आया, तुफान सा कहर
हर देश हर शहर शहर
कश्ती का बीच, भंवर डूब जाना
बड़ा बेदर्दी, ओ!बिषाणु कोरोना ।।।।

उम्मीद

उम्मीदो का ही, ये ताब है
जो जिन्दगी को, बनाए रखती
बढती रही, जिन्दगी की गाड़ी अनवरत
इस उम्मीद की चाव में

पा हौसला उम्मीदो को
पंख लग जाते, बेहिसाब
मन धरातल पर पल्लवित हो
पलने लगते, सुनहरे ख्वाब

रच बस, जाती
बेपनाह, पोर पोर
जगती रहती, हरदम
जिसका कोई, ओर न छोर

देती कभी शुकून तो
कभी दर्द बेइंतहा
कभी खडी कर देती
एक प्रश्नचिह्न, बेपनाह

उभर जेहन में, मथती रहती
ना उम्मीदी में भी, उम्मीदी की
आहट और चाहत
यही जीवन की होती, राहत।।

यादें

यादों के अथाह समन्दर में
देखा हमने, *दर्द की रेखा
और देखा है, *लहराता हुआ
खुशियो से भरा सैलाब भी
ढुढते हूए, सीपीयो से निकाला है
प्रेमिल रिश्तो की, मोती का भंडार भी
अनगिनत, अनकहा, अनछुआ
भाव जो, दबे थे, अंतस में
देखा है, *रचा, बसा इक संसार भी।।

रजनी और दिनकर

रजनी और दिनकर
क्षितिज पर ठहरे, दो युगल
रजनी और दिनकर
अन्तराल है, गोधूलि का
इन्तजार मे खड़े है, बांधे कर
घड़िया होती, बडी निर्मम
तक रहे, रजनी और दिनकर
विरह वेदना मे है, प्रतिपल
नैनों से, दर्द बहते झर झर
कैसी है, घोर विडंबना
प्रेमी है, रजनी और दिनकर
बंधे है, समय की टिक टिक पर
मिले बिना ही, लौट जाते घर
एक आता, दूसरा चला जाता
अनुपम है, रजनी और दिनकर
रूह का रूह से है, वास्ता
विदा हो जाते, अंखियो में सपने भर ।।

जीवन और संघर्ष

नारी जीवन है, संघर्षमय
चलती, अहर्निष करके सबका समन्वय
करती है, सृजन से साक्षात्कार
ढलती, पानी सा आकार
सदियों से अहिल्या, सुभद्रा
तारा, कुन्ती, और द्रौपदी
सब ने संघर्ष सहा है
मिटाते, सब भूख प्यास
इतिहास यही रहा है
नारी धरा सम , पल्लवित
कर प्राणों का, वृक्ष सृजन का
अपने सपने अपनी आकांक्षाए
करती, अपनों पर है अर्पण
गिरता वजूद, मगर जनमता
अलसुबह, स्वाभिमान की नयी उजास
गढ़ने को प्रतिमान, लेकर नयी आस
टूटते तारों से मांगती ,एक और जन्म
अधूरे सपने को पूरा करने
मिल बाँट, खाई को भरने
अंतचेतना देखती रहती
बर्फ वेदना पिघलती रहती
नारी जीवन है, संघर्षमय
चलती, अहर्निष करके सबका समन्वय।

आगाज

खडंग उठा लिया है, हमने
बेटी की अस्मिता, बचाने के लिए
वहशी, दरिंदगी रुकेगी नहीं
मानवता को, बचाने के लिए
सही हल यह है कि नही?
बस, अब समझने के हम
काबिल, अब नही
लहू पीने वालों को
रक्तरंजित करना ही है, सही
भङक रही, ज्वाला दिल में
अब बुझने, नही चाहिए
विश्व भर में, नारी इज्जत का
एक नया आगाज चाहिए।

फुरसत

आ गई, एक कहीं से
चिलचिलाती धूप का टुकड़ा
जल रहा, तन बदन
मानों सर्वांग ही जकड़ा
जिन्दगी में, समय जो
ठहर सी गई थी
मगर, भिन्नते, आरज़ू मे
वो भी सिल गई थी
लिख गई, एक नज्म, तुम पर
और बिखर गई थी, हर्फ हर्फ
कागज के पन्ने पर
न मिली, फुर्सत तुम्हे
आज तक पढने को
वो, वक्त जो था ठहरा
बढ गया, कब का
न जाने, किधर को ।।।।

दरार

डर है, कहीं
उद्वेग, जला न दे कहीं
रिश्तो के अरण्य को
झुलस न जाए, कहीं
लहलहाते दरख्त से अरमां
बचा न पाएंगे, फिर
झाङ, झकाङ कोमल फुनगी
संवेदनाओ भाव के पात को
संपदा है, जीवन के राह के
बढ रहे, पल रहे, कब से अविराम
स्नेह की पकङ, कब ढीली पङ गई
कब आ गई, रिश्तों की शाम
डर है, कहीं
आ जाते क्यूं, सुबह शाम के बीच
तीसरे, दोपहर की तपिश और गरमाई
अनकुरा, दिल पर है, जो छाई
अर्से बाद अंतर्नाद कर रहा
अंतर्मन, खौलता तेजाब सा
बढ रहा, एक लकीर
सच! फैला दरार सा ।।।।

फुर्सत के पल

बस, यू ही
बेफिजुल की हरकते
हो रही, कुछ सदुपयोग भी
हो रही, कुछ बैठे बिठाए
चटपटी खाने की मीनू
सबने झटपट, बनाए
बडी बडी दिन, और छोटी रातें
उमस भरी, मौसम भी खूब सताए
रहता हमें इन्तजार, सुरमई शाम का
जहां बोलते बतियाते घंटो हम
छत पर बिताते
वक्त ही कुछ ऐसा है, जो देता है
उलझने, खामोशी, एकाकीपन
समाचार वायरस के खौफ का
मगर, इन्तज़ार है उम्मीद की बाती से
जगमगाते रौशन दीप के लम्हे का।

विश्वास की चाहत

शुकून है, बस इतना
इत्मीनान है, पुरा
लौट कर,एक दिन
आओगे, पास तुम मेरे
बंधे हुए, नेह के धागे से
सच! उलझे है तो क्या
हाथ में है, एक सिरे
विधी का विधान
असंगितियो का प्रपात
फिर भी, मिलने की चाहत
बीच भंवर, जो छुटे थे हाथ
अनपेक्षित ख्याल, और छटपटाहट ,जीवन का है
यही तो, सहारा
शायद, फिर से घूमती हुई लहर
सुलझती हुई आके
लगेगी किनारा।

यादों की गलियां

कुछ अहसास, शब्दों मे
पिरोया नहीं जाता
महसूस किया जाता
बंद पलकों की गलियों में
सिमट कर ही रह जाता

कच्ची उमर की, कयी अनकही
वक्त की टिक टिक संग
फिर नहीं आना
नंगे पाँव दुब पर चलना
पत्तों पर फिसलते, ओस की
बूँदो को हथेली पर रखना

कितना सहज लगता था, रूमानी
हर लम्हा, कहता इक कहानी
रौशन रौशन हुआ, मन आंगन, देहरी
जैसे, कच्ची धूप की है बिखरी पंखुरी।

सुबह का भूला

भोर की अरुणिमा
और शाम की कहानी
सुबह से शाम तक सफर की रवानी
निर्लिप्त हर कोई वक्त के आकार में
जिन्दगी एक अनबुझी सी पहेली
फिर मन क्यु चित्कार में
पूछती है, खुद ही खुद से
क्या मुमकिन नहीं
फिर से शाम संग लौट आना
अस्तित्व के लिए
क्या, ये उचित है
मन से विमुख हो जाना
सच! कहा है किसी ने
मन से जीते जीत है
मन से हारे, हार
सृष्टि मे सबसे पहला
मन ही घर बार है।

बहता दर्द

उमङ्ता, दर्द सैलाब का
अविरल, बह रहा, खामोशी से
कंपित अधरों की है, इम्तहा
लफ्जों को जप्त, करे कैसे
एक अविलम्ब, एक सहारा तो था
मगर, टूटता हर हाल में
चमकता वो, सितारा ही तो था
बीते पल की, कसक होती, हरदम
बढ जाते, हाथ पकड़ने की चाह में
अश्रुपुणॅ नयना छलक जाते
भींच जाते लब, ठिठकते
शब्दों के आह में।

मैं नारी हूं

मैं नारी अलबेली
नारीत्व की गरिमा में
जमीं से जुड़ी, उड़ रही आकाश में
रोम रोम से, रचा है जिसने
खुशियों का आंगन, हर घर में
कन्या, औरत, बेटी पत्नी
भाभी और बहुरानी है
सबसे बड़ी मां का ओहदा
जिससे दुनिया सारी है
रिश्तो की अनन्त श्रृंखला
जिससे वह जुड़ जाती है
नारी मन की थाह नही
कितनी सशक्त बलशायी है
नारी का सम्मान करो, तुम
जिसकी वो, हकदायी है।

आस नैहर की

चिलचिलाती धूप मे
छावं की ख्वाहिश
तपते मन की, प्यास है

ढुढती कुछ नजरें हरदम
बेटी की फरियाद
और नैहर की आस है

जन्मी कहीं और
जीवन निर्वाह और कहीं
जिन्दगी की बस यही
रूदन और हास है

भरी दुपहरिया में भी
देहरी से, कदम बढ चले
नैहर से पीहर की ओर
मुड़कर देखती वो
मां के आंचल की छावं

ममता की एक बूंद के लिए
आजीवन ढुढती
स्नेहिल नजरों की ठावं

वही प्रीत, वही शक्ति है
जिससे हो, पुनरागमन
नहीं तो फिर, बेहिचक
बढ चले, कदम पीहर के गावं।

सश्रम कारावास

कुछ सकारात्मक पहलू से
जुड़ जाओ, गर
हम स्त्री का नहीं है
नियति, सश्रम कारावास
स्नेहिल रिश्तों मे जुड़ हम
स्वयम करती वरण
करती बंधन की आस
खुद हो जाओ, इतनी सक्षम
वसूल लो, *अपना आत्मसम्मान
बनाओ न तुम, इसे बेवजह आन
हम भारतीय नारी की, यही है पहचान ।।।।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

संध्या गुप्ता

श्री प्रभात कुमार
सुमित्रा काम्पलेक्स
अपोजिट श्री लोक, एच.बी.रोड
थरपकना, रांची (झारखण्ड)
पिनकोड नंबर-८३४००१

Email- sg3345574@gmail.com
Mobile - 9708659621

आज वैश्विक महामारी से सब तरफ खौफ का मंजर है। जीवन की रफ्तार, सड़के ठहर गई। विस्तार, विकास मानो जम से गये। भविष्य रूक गये, वर्तमान मे हम ठहर गये, अतीत की गलियों में विचरने का वक्त आ गया हो, जैसे। जो न कर पाए, जिन्दगी की आपाधापी मे, नये विचार अपने खोए सपने, शौक रचनात्मक क्रिया कलाप से जुड़ने की ख्वाहिश होने लगी ।

भागती दौङती जिन्दगी में, ठहराव से, अचानक वेबुनियाद निराशा की दुब पनपने लगी। निराशाओ के अरण्य मे सृजन ही एकमात्र रौशनी है।

अपातकाल मे घर पर ही, बाहरी गतिविधियों के बंद होने पर फैली उदासीनता में मन का सृजन पहले करना होगा ।कुछ घरेलू क्रिया कलापो को कर, जैसे पक्षियों को दाना दे, पौधों संग बतियाए, लूडो सांप सीडी, ताश के पत्ते से दिल लगाए या फिर कुछ अंताक्षरी, किताबो से दोस्ती, भावो को शब्दों में पिरो कविता का ही क्यों न सृजन करे। कुछ कर गुजरने का दम भर ले।

मन के सृजन से ही भौतिक रचनात्मकता और फिर निराशाओ से निजात पाया जा सकता है। अन्ततः सृजन से आत्मिक सुख, शांति, खुशी और उम्मीद के दीपक जगमगाएगे।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-206-7

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/